



Study AV Kand 5 Hindi

### अथर्ववेद 5.15.1 से 11

एका च मे दश च मेऽपवक्तार औषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥१॥

(एका च मे) और मुझमें एक, और मेरे विरुद्ध एक (दश च मे) और मुझमें दस, और मेरे विरुद्ध दस (अप वक्तारः) गलत वाणियों, भटकाव, दुरुपयोग (औषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो ।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं? इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है। मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध एक या दस गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं। हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

जीवन में सार्थकता:-

वाणी की मधुरता किस प्रकार एक प्राकृतिक और आध्यात्मिक औषधि है? मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध असंख्य गलत आदतें और लक्षण हो सकते हैं, परन्तु हमारा प्रयास वाणी, मन और व्यवहार में मधुरता बढ़ाने पर केन्द्रित रहना चाहिए, क्योंकि यह मेरे अन्दर और अन्य लोगों में मेरे विरुद्ध ऐसे गलत लक्षणों का प्राकृतिक और आध्यात्मिक इलाज होगा। सर्वमान्य सत्य अर्थात् परमात्मा का प्राकृतिक परिणाम है मधुरता जो परमात्मा में रहती है। हमें परमात्मा से ही मधुरता प्राप्त होती है। अतः हमारे द्वारा पैदा की गई मधुरता भी परमात्मा में ही जायेगी, क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

सूक्ति :- (ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः – अथर्ववेद 5.15.1) हे औषधि! आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

### अथर्ववेद 5.15.2



द्वे च मे विंशतिश्च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥२॥

(द्वे च मे) और मुझमें दो, और मेरे विरुद्ध दो (विंशतिः च मे) और मुझमें बीस, और मेरे विरुद्ध बीस (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो ।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है ।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध दो या बीस गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं ।  
हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है ।

### अथर्ववेद 5.15.3

तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥३॥

(तिस्रः च मे) और मुझमें तीन, और मेरे विरुद्ध तीन (त्रिंशत च मे) और मुझमें तीस, और मेरे विरुद्ध तीस (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो ।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है ।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध तीन या तीस गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं ।  
हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है ।



#### अथर्ववेद 5.15.4

चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥४॥

(चतस्रः च मे) और मुझमें चार, और मेरे विरुद्ध चार (चत्वारिंशत् च मे) और मुझमें चालीस, और मेरे विरुद्ध चालीस (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो ।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है ।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध चार या चालीस गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं ।  
हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है ।

#### अथर्ववेद 5.15.5

पंच च मे पंचाशच्च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥५॥

(पंच च मे) और मुझमें पांच, और मेरे विरुद्ध पांच (पंचाशत् च मे) और मुझमें पचास, और मेरे विरुद्ध पचास (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो ।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है ।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध पांच या पचास गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं



हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

#### अथर्ववेद 5.15.6

षट् च मे षष्टिश्च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥6॥

(षट् च मे) और मुझमें छः, और मेरे विरुद्ध छः (षष्टिः च मे) और मुझमें साठ, और मेरे विरुद्ध साठ (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?  
इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध छः या साठ गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं  
हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

#### अथर्ववेद 5.15.7

सप्त च मे सप्ततिश्च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥7॥

(सप्त च मे) और मुझमें सात, और मेरे विरुद्ध सात (सप्ततिः च मे) और मुझमें सत्तर, और मेरे विरुद्ध सत्तर (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है। मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध सात या सत्तर गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं। हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

#### अथर्ववेद 5.15.8

अष्ट च मेऽशीतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः॥८॥

(अष्ट च मे) और मुझमें आठ, और मेरे विरुद्ध आठ (शीतिः च मे) और मुझमें अस्सी, और मेरे विरुद्ध अस्सी (अप वक्तारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?  
इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है। मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध आठ या अस्सी गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं। हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

#### अथर्ववेद 5.15.9

नव च मे नवतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः॥९॥

(नव च मे) और मुझमें नौ, और मेरे विरुद्ध नौ (नवतिः च मे) और मुझमें नब्बे, और मेरे विरुद्ध नब्बे (अप वक्तारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध नौ या नब्बे गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं।  
हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

#### अथर्ववेद 5.15.10

दश च मे शतं च मेऽपवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥10॥

(दश च मे) और मुझमें दस, और मेरे विरुद्ध दस (शतम् च मे) और मुझमें सौ, और मेरे विरुद्ध सौ (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात) सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (करः) करो।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?  
इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है।  
मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध दस या सौ गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं  
हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

#### अथर्ववेद 5.15.11

शतं च मे सहस्रं चापवत्कार ओषधे ।  
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥11॥

(शतम् च मे) और मुझमें सौ, और मेरे विरुद्ध सौ (सहस्रम् च) और हजारों (अप वत्कारः) गलत वाणियाँ, भटकाव, दुरुपयोग (ओषधे) बीमारियों, प्रदूषण, डरपोक आत्माओं को साफ करने वाला (ऋतजात)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सर्वमान्य सत्य से उत्पन्न (ऋतावरि) सर्वमान्य सत्य में रहने वाला (मधु) मधुरता (मे) मुझमें, मेरे लिए (मधुला) मधुरता पैदा करने वाले (कर:) करो।

व्याख्या:-

हमारे जीवन में कितनी गलत वाणियाँ, भटकाव और दुरुपयोग हो सकते हैं?

इन गलत वाणियों, भटकाव या दुरुपयोगों को ठीक करने के लिए कौन औषधि की तरह कार्य कर सकता है?

इस सूक्त का देवता है 'मधुला औषधि' अर्थात् मधुरता पैदा करने वाली औषधि जो परमात्मा है।

मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध सैकड़ों या हजारों गलत वाणियाँ, भटकाव या दुरुपयोग हो सकते हैं।

हे औषधि! आप रोगों, प्रदूषण और भयभीत आत्माओं को साफ करने वाले हो, आप सर्वमान्य सत्य से पैदा होते हो और आप सर्वमान्य सत्य में रहते हो, कृपया मेरे अन्दर मधुर वाणी वाली प्रकृति को पैदा कर दो क्योंकि आपकी प्रकृति मधुरता वाली है।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171